CHANDRAKALA GAEKWAD

मै केडिया डिस्लरी में काम कर रही थी केडिया डिस्लरी में १९९० कम्पनी में काम करते करते हम लोग काम कर रहे थे और वहाँ महिला लोग बहुत सारे मतलब ८०-९० महीला और ४००-५०० वर्कर लोग थे सब हम लोग काम करते थे । वहाँ ऐसा कुछ नही था कि तुमकों इतना रोजी मिलगी या छुटटी मिलेगी कि मैडीकल ऐसा कुछ नही मतलब कुछ नही था हम लोग काम करते है वहाँ पर

Q- तुम्हारा वहाँ पर क्या काम था ।

Ans. सप्लाई मतलब वहाँ खाली बोतल लाना ले जाना बोतले धुलाई होती थी । वाशिंग मशीन को चलाना वहाँ तक बोतले लाना ले जाना और गाडी आ जाती तो उसकों खाली करना भरना यह सब काम था

Q- यह काम सिर्फ औरते ही करती थी या औरत मर्द दोनों करते थे ।

Ans. अधिकतर औरत मजदूर भी थे लेकिन उनका और भी अलग अलग काम था

Q- जहाँ से तुम बोतले उठाती थी और ले के जाती थी वहाँ पर वह भर रहे होते, कितना दूर और किस चीज में बोतल भरते थे

Ans. ऐसे ही पैदल जाते थे पेटी रहती थी वहाँ पर एक दो पेटी सिर पर उठाकर ले जाते थे और बहुत दूर ले जाते थे

Q- अन्दाजन कितनी दूर ले जाते थे

Ans. पचास मीटर दूर ले जाते थे

Q- सुबह कितने बजे काम पर आते थे

Ans. सुबह ८ बजे से काम करते थे ८ बजे गेट में आ जाना ८ बजे से शुरू रहते थे चाहे बरसात हो चाहे गर्मी हो या ठन्ड हो कितनी भी बारिश होती रही लेकिन वहाँ से हमकों आना जाना पडता था छुटटी वगैरा भी नही मिलती थी सुबह ८ बजे कम्पनी में चले जाना और आने को कोई टाईम नही होता था कि कितने बजे घर आना है । अगर हम लोग बोल देते पहले तो नही बोलते थे क्योकि इतनी हिम्मत नही होती थी कि कैसे बोले जब हम लोग यूनियन में आये हमको पता चला कि नियोगी जी का यहाँ संगठन बनने वाला है तो पर्ची वगैरा कटवाना है तो कटवालों पहले तो हमकों समझ नही आया फिर उसे बाद में हम लोग बोले कि यूनियन आ रहा है नियोगी जी का क्योकि मेरा बचपन राज हरा में ही गुजरा तो मुझें मालूम था कि नियोगी जी बोल रहे है तो वही मजदूर आन्दोलन का ही होगा ।

इसकों तो हम बचपन से ही जान रहे है । यह तो अच्छा मजदूर सगंठन है ऐसे पता चला तो सब महिला मजदूर को हम लोग एक दिन जामूल कार्यालय में ले गये ।फिर वहाँ पर भाई वगैरा से बातचीत किये ऐसी ऐसी बात है वह हम लोगों को बोले कि पर्ची वगैरा कटवा लो और समझाये कि ऐसा ऐसा है कि हम लोगों को जूलूस निकालना है पूरा संगठन के बारे में बताया । तो हम लोगों के दिमाग में थोडा आ गया तो मै बोली कि चलो पर्ची कटवाना है तुरन्त पर्ची कटवा लिया

Q- पर्ची का मतलब

Ans. यूनियन की पर्ची मतलब कि वहाँ के सदस्य हो गये फिर हम लोग बोले कि पर्ची कटवाना है तो कटवाना ही है तो जितनी महिला मेरे साथ गयी थी तो उन सब की पर्ची कटवा ली । शनिवार का दिन था

Q- कितनी महिलाए गई थी

Ans. कम से कम ३०-४० महिलाए गई थी

Q- सब सप्लाई में काम करते थे

Ans. हाँ उस समय से ज्यादा भी काम कर रहे थे । जिस दिन हम सोचे कि आज जाना चाहिए तो हम लोग चले गये

Q- कहाँ पर दफ्तर था

Ans. जामून में था और हसीम बोर्ड में भी था पर हम लोग शुरूआत में जामून में ही गये थे तो हमें पता चला कि शनिवार का दिन था हम लोग आधे दिन तक काम किया और चले गये तो ठेकेदार बोला क्यो कहाँ चले गये थे जब हम लोग सोमवार को काम पर गये थे तो वहाँ गये थे तो हम लोग नही बताये कि कहाँ गये थे । नही बताये, जब नही बताये तो उसको तो पता था कि यह लोग कुछ अन्दर ही अन्दर काम कर रहे है तो बोला कहा गये थे पहले बताओं तो हम लोग दो यह जवाब दिये कि हम छुटटी के बाद हम कही भी जाये उससे आपकों क्या मतलब है । हम अगर काम के बीच में कही जा रहे है तो आप बोल सकते है हम छुटटी के बाद कही भी जाये । हम अपने घर से कही भी नही जा सकते क्या

Q- जहाँ पर तुम केडिया में काम कर ही तो १९९० में तुमने वहाँ काम करना शुरू किया था

Ans. नही पहले से

Q- कब से काम कर ही थी

Ans. दो ढाई साल पहले से

Q- वहाँ पर ट्रेड यूनियन कभी नही था

Ans. नही नही था हम लोग किसी को नही जानते थे

Q- तुम यहाँ पर काम पर लगी तो कैसी थी

Ans. मै पहले BC में काम कर रही थी शुरूआत में BC में कर रही थी तो वहाँ बैठाने का चक्कर था बैठा देना है । तो वहाँ ज्यादा दिन में काम नही कि शुरूआत घर से निकली थी तो बैठा देते थे अच्छा नही लगता था । दो महीने बैठा देते एक महीना काम करो एक महीना घर में बैठों क्या मतलब होता है ऐसा तो ऐसे परिचय के साथ मोहल्ला की महिला गयी । मै उसके साथ गयी मै तो देखी नही थी कि केडिया यही है तो उसके साथ ही गई थी ।

Q- तुम तब यही पर रहती थी

Ans. हाँ यही पर

Q- तो यहाँ से केडिया डिस्टलरी कितनी दूर है

Ans. बहुत दूर है ।

Q- तो काम पर कैसे जाती थी

Ans. पैदल चले जाते थे

Q- कितना दूर कितना किलोमीटर होगा अन्दाजन

Ans. कम से कम आधा घन्टा पैदल जाने में लग जाता था

Q- वहाँ पर कोई ठेकेदार था जिसके तहत आप लोग काम करते थे

Ans. हाँ सन्तोष ठेकेदार था वह लोग चार भाई थे एक भाई वही कैशियर था और बडा भाई ठेकेदार था छोटा भाई केडिया डिस्टलरी कुमार का ठेकेदार था और वह गुण्डगर्दी वाला भी था

Q- वहाँ पर तनख्वा कितनी मिलती थी तुझको

Ans. १३-१४ रूपयें रोजी बढाने के लिए बोलने से वह कहते थे काम करना है तो करो नही तो घर जाओं और जैसे की ओवर टाईम रखना है तो उनका काम है तो वह कितने भी समय छुटटी देने चाहे रात भी काम करवायें चाहे २ बजे रात तक काम करवाये चाहे ४ बजे तक काम करवाये उसकी कोई गारन्टी नही है कि वह घर पहुच जाये ।

अगर हम लोग बोलते कि हमारे घर में छोटे बच्चे है हम लोग नही काम कर रहे है दिन के भले ही हम कर लेगे लेकिन रात को नही करेगें तो वह लोग गेट के चारों तरफ ताला लगा देते थे अन्दर बन्द फिर तो मजबूरी के साथ अन्दर में काम करना पडता था फिर सके बाद २ बजे उनका काम खात्म हुआ और फिर गेट खोल देते थे और कहते थे कि अब जाओं अगर हमने बोला कि तुम ऐसा करते हो हम नही आयेगें तो वह बोलते थे कि मत आना लेकिन मजबूरी में करना ही पडता था

Q- वहाँ पर जो भी काम कर रहे थे कोई प्रमानेन्ट नही था सब ठेके पर थी

Ans- कोई नही

Q- सप्लाई के काम में कितनी औरते थी

Ans- १००-१५० थी

Q- कोई प्रमानेन्ट नही हुआ

Ans- नही कभी नही हुआ

Q- कोई औरत दो साल से ज्यादा काम कर रही थी

Ans- हाँ बहुत सारी कर रही थी पर उनको डिलवरी के समय भी उनसे काम करवाते थे उनको छुटटी नही मिलती थी । अगर कोई डिलवरी के समय घर में बैठें रहे तो तुम पैसें दो तो तुम पैसे दो महिला कम्पनी में पैसा देती थी, क्योकि डिलिवरी के लिये जा रही तो इतने महीने घर में बैठेगी इसलिए पैसे देते थे और सब देते थे

Q- जब तुम वहाँ पर काम करते थे पूरा दिन या रात तक के बीच में खाना खाने के लिए छुटटी मिलती थी ।

Ans- हाँ आधा घन्टा

Q- क्या खाना घर से लेके जाते थे

Ans- हाँ घर से लेके जाते थे

Q- चाय पीने के लिए कितनी बार छुटटी मिलती थी

Ans- नही सिर्फ खाना खाने के लिए

Q- कभी भी कोई ट्रेड यूनियन वहाँ पर नही था किसी भी पार्टी झन्डा किसी कोई नही तो तुमने नियोगी जी के आने का सुना या १९९० में पता चला उनका कि भिलाई में आये है तो क्या पता चला था कि भिलाई में किस कारण वह आये थे

Ans- यहाँ श्रम कानून लागू नही हो रहा था फैक्टरियों में वैसे ही अन्धाधुन्ध चल रहा था उधोगपतियों की लूट और किसी भी

मजदूर को कम्पनी में कोई गारन्टी नही थी । चाहे वह दस साल काम कर रहे चाहे २० साल काम करे बस जितना रोजी है बस उतने तक ही बात करो उससे ज्यादा कुछ नही फिर नियेागी जी ने वहाँ देखा और सोच विचार किया

Q- फिर जब पर्ची वहा कटाई जब मैम्बरशिप बनी उस वक्त यूनियन का नाम क्या था

Ans- छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा ।

Q- उस समय भी छततीसगढ मुक्ति मोर्चा के नाम से ही थी यूनियन तो वहाँ पर मैम्बर बनने के लिए पैसा देना पडता था क्या सिस्टम था

Ans- नही नही पैसा नही देना पडता था

Q- फिर आप मैम्बर बन गये और वापस अपने काम पर आ गये फिर मैम्बर बनने के बाद वहाँ पर काम की जगह पर क्या हुआ

Ans- उन लोगों को पता चल गया कि १७ दिसम्बर को पहला यहाँ जूलूस निकला । हमारे सगठन में जुडने के बाद तो हम लोगों को पता चला कि रैली तो हम लोग पहले जानते नही थे तो रैली में गये तो सबसे पहले मै बेनर पकडके चली । करना है तो करना है और आगे हो गये है

उन लोगों को पता चल गया कि यहाँ सगठन आ रहा है तो मालिक लोग तो पूरा जोर लगायेगें कि इनका सगठन तोडों तो उन लोग कम्पनियों में गुण्डा लोगों को लाना शुरू कर दिया । लाठियाँ लाकर कोई कोई तो चाकू पकडें, कोई कुछ पकडें है

अपना अपना वे लोग बन्दोबस्त कर लिये । ठेकेदार और मैनेजर लोग मिलकर के देखों आज कुछ हो सकता है

तब भी मजदूर लोग हिम्मत करके नियोगी जी के साथ रैली निकाले और जूलूस निकाले । पता तो चल गया दूसरे दिन कम्पनी में, काम पर गये तो हमसे पूछा तुम कहाँ गये थे लोगों को पता चल गया १७ सितम्बर को विश्वकर्मा जयन्ती रहती है । तो विश्वकर्मा जयन्ती को वह लोग काम पर बुला लिये क्योंकि उन लोगों को पता चल गया कि यह लोग जूलूस निकालेगे तो इनको कैसे रोकना चाहिए । तो वह लोग क्या किये कि विश्वकर्मा जयन्ती के दिन वह लोग अपने यहाँ कार्यक्रम बना लिये कि यहा पर पूरी सब्जी बनाओं और पूरे मजदूरों को घेर कर रखों क्योंकि पूजा वगैरा भी करेगे और वहाँ नही जायेगे यह लोग साजिश चल कि कम्पनियों में ताला लगा दो और यहाँ मजदूर लोगों को पूरी सब्जी बनाने के लिए लगा दो और खाओं और रहो यही पर ।

Q- तुम उस दिन काम पर नही गये

Ans- हाँ गये थे पूजा में लेकिन हम लोग यही सोच कर गये थे कि वहाँ रूकेगें नही और हम लोगों को बोले कि चन्दकला पूरी बनाओं किसी को पानी लाने के लिए किसी को कुछ, सबको काम बता दिया । हम लोगों को पता चल गया था हमामरा दिमाग तो उधर था कि नही हमको जाना है हम लोग यह कह कर निकल गये कि हमारे घर में काम है हम लोग पूरी वगैरा कुछ नही खायेगे और हम लोग वहाँ से निकल गये

जो जो निकल गये थे उसका परेड किया कि कहाँ गये थे हम लोग बोल दिये कि हम कही भी जाये छुटटी के दिन उससे तुम को क्या लेना देना । आप बोल नही सकते जो बोल सकता था उसको कुछ नही बोले और जो नही बोले उनको दो दिन बैठा गया बैठो आज काम पर मत आओं ।

फिर हम लोग काम तो करते थे तो हम लोगों को इतना वजन जो कि महिला उठा नही सकती थी वहाँ पर उस जगह से बडें बडें बोल्डर उठवाते थें । सीमेन्ट की बोरी उठवाते थे तो हम लोग बोलते थे कि तुम कुछ भी करवाओं मेहनत के लिए हम पीछे नही हटेगें और मोर्चा को भी नही छोडेगे हम लोग वहाँ पर जुडें रहेगें

Q- उस दिन पहली रैली कहाँ पर निकली थी १७ सितम्बर वाली रैली तुम लोग कहाँ गये

Ans- पूरे इन्डस्ट्रीयल बैल्ट में केडिया डिस्टलरी के आगे से निकल कर असीम बोर्ड से होते हुए पूरा सिम्पैक्लस चोक से वीके फिर वहाँ पर आम सभा किये ।

Q- उसमें अलग अलग कम्पनियों के मजदूर आये थे

Ans- हाँ सब मजदूर

Q- तकरीबन कितने लोग थे

Ans- बहुत थे

Q- अन्दाजन कितने २००, ५००, १०० कितने थे

Ans- बहुत सारे थे

Q- उसके बाद कोई मीटिंग या जन सभा हुई थी । रैली के बाद

Ans- हाँ नियोगी जी ने भाषण दिये और हमारे मुख्य भाई लोग सब भाषण दिये । राज हरा और सब जगह से आये थे भाषण वगैरा दिया । जब भाषण खात्म हुआ तब हम लोग आये ।

Q- फिर तुम अपने काम पर वापिस चले गये ।

Ans- हाँ दूसरे दिन गये हम लोग जाते थे वहाँ तो पता चला तो वहाँ तो पचला चल गया था ठेकेदार, मैनेजर वगैरा को यह लोग संगठन से जुड गये है तो फिर परेशान करने लगे कि यहाँ से तुम वहाँ काम करों आज रात को काम करना पडेगा

तो हम लोग जिस डिपार्ट में काम कर रहे थे तो उससे हट के जा गढढा पाटर है जहाँ घर बन रहा है वहाँ वहाँ काम करने के लिए देते थे कि तुम यह काम करों हम लोग बोलते थे कि कोई बात नही हम लोग यह काम करने के लिए भी तैयार है हम सारे लोग चालाक (समझदार) हो गये थे काम करना है तो करना है ।

फिर वह लोग हमारे डिपार्ट में नये कुली को लाते थे काम करने के लिए, वह लोग कर नही पाते थे इतना ज्यादा काम था एक दिन में कुछ नही होता था दो दिन जब काम करवाते थे फिर भी कुछ नही होता था । काम जैसा का तैसा पडा रहता था और मशीन भी नही चलती थी । तो फिर मजदूरी में पुराने मजदूर लोगों को बुलवाते थे । फिर हम लोग बोलते थे कि नही जायेगे । हम लोग यही ठीक है वह बोलते थे कि नही नही चलों उन लोगों से काम नही होता तुम लोग चलकर करो।

और जैसे मेरे को मुख्य मजदूर लोगों ने बनाया था जेसे कही भी जाना है मुझें ही भेजते भाई और बहन लोग जा तू ऐसा करके तो मै जाती थी । पूरे दिन काम करती थी अगर आधा घन्टा पहले चली जाती थी तो उस दिन मेरी रोजी पूरी कट जाती थी । दो दिन तीन दिन पेमेन्ट लेने के लिए जाती थी । तो बोलते थे कि तुम्हारा इतना दिन कट गया । तुम काम नही कर रहे थे । तो मै बोलती थी कि तुम क्या सोचते हो कि चन्दकला की दो तीन दिन की रोजी काटने से चन्दकला संगठन छोड देगी । मेरी पूरे महीने भर की रोजी काट दे पर मै सगंठन नही छोडूगी । इतना ध्यान रखना कि मै बहुत बोलती थी ।

Q- तुम्हारी यह बाते ठेकेदार से होती थी या मैनेजर से भी कभी बात किया

Ans- हॉ सबसे करते थे

Q- कभी मालिक से मिले थे

Ans- नही मालिक से नही मिले थे आते थे लेकिन जब हम संगठन से जुडें तो मालिक वगैरा नही आते थे । मैनेजर वगैरा से बात होती थी

Q- तुम मुखिया कैसे बनी

Ans- सभी लोगों ने ही बोला कि तू थोडा ठीक ढंग से बात भी करती है और तेरा बोलने का ढंग भी अलग है इसलिए मुखिया तू ही बन । मुझें यह नही मालूम था कि यह सब करना है लेकिन करना है तो करना है ।

Q- घर से तुम्हे क्या रैशपोन्स मिला तुम्हे अपने पति से

Ans- मै बचपन से ही राजाहरा में थी इसलिए मुझें मालूम था विश्वास हो गया था कि एक बार मै नियोगी अम्मा से बात करूंगी तो वहाँ उनके साथ जुड गये । मीटिंग वगैरा में रात को भी जाना पडता था तो एक दिन उधर से ही बोले पहली बार कि चन्दकला कोई नही जा रहा हमारी तरफ से तू जा । पहले शुरूआत में तो आन्दोलन में एक दिग्गज नेता पैदा होते है कंपनी में हो चाहे कही हो फिर उसके बाद दो दिन के लिए लोग बोले कि चलों एक चन्दमणी चौहान था और राय वगैरा गुलाब प्रजापति ऐसे नाम थे जो पहले मुखिया थे वे लोग बोले चलो चन्दकला चलो ।

मै कम्पनी की तरफ से चली गयी मुझें ले गये । मुझें क्या पता कितना रात होगा घर में पहली बार रात को घर गयी थी । घर से कभी भी नही बोले के जा मै अपने से ही निकली थी । यह सोच कर कि जल्दी आ जायेगें पर नियोगी जी कि इन्तजार करते करते रात हो गयी ।

रात हो गयी तो मुझें यही पर ही छोडें और पहले पहले जब सगंठन से जुडे तो इतनकी जानकारी भी नही थी तो मै रात को आयी तो बोले कहा गयी थी । वह परेशान हो गये कभी तो कही जाती नही थी । फिर मै बतायी कि हम लोग सगंठन में जुडे है तो वहाँ भैया से बातचीत करना था तो इस लिए देर हो गयी । तब कुछ नही बोले । तब से जब से सगंठन में हूँ कही भी चले जाओं, कही भी कुछ भी ऐसा कुछ नही बोले ।

Q- तुम्हारे पति भी सगंठन में जाते है ।

Ans- हाँ जाते है कभी नही छोडते है । एक बार अगर मै लेट हो गयी तो वह चिल्लायेगें कि जा जल्दी लेट क्यो हो गयी ।

Q- राज हरा में तुम्हारे माता पिता खाददान मजदूर थे ।

Ans- नही हम लोगों की दुकान थी मेरे पिताजी बहुत बडें टेलर थे ८-१० मशीने चलती थी और चावल वगैरा की दुकान थी तो हम लोग पढाई भी नही किये हम लोग बचपन से ही वहाँ रहते थे । हमें सब पता था ।

Q- जब तुम लोग मैम्बर बन गये तो कम्पनी में केडिया में कभी भी तुम्हारे साथ ठेकेदार ने या किसी और ने मारपीट की है

Ans- हाँ हुई है हम लोगों को ठेकेदार बोलता था । मेरे को बोलता था । हम लोग जब से सगंठन में जुडें । जुडने के बाद थोडी हिम्मत भी आने लगी और भैया लोग समझाते भी थे । तो चाहे रोजी के लिए हो चाहे इतने घन्टे से इतने घन्टे तक काम करना है तो उतने घन्टें तक ही करेगे । उससे ज्यादा नही करेगें । चाहे वह गाडी आ जाये चाहे तुम उसकों रखो रखो ४ दिन, रहे या ८ दिन रहे हमको काम नही करना है तो नही करना है

वह सब देखते थे कि सगठन के आने से मजदूर चालाक हो गये है यह लोग क्या किये कि ये मजदूर को नही रखाना है तो नही रखाना । ये मुखिया को नही रखाना है वह लोग जान जाते थे कि यह अगवाई कर रहे है अब यह नेतागिरी में उतर गये । अब उसको क्या करना है । उसको कहते थे तुमको काम नही है मुझें कहते थे कि चन्दकला तू सगंठन में मत जा वगैरा वगैरा तो मै कहती थी कि नही मुझें इसके लिए मना मत करों

मजदूर का कहना था कि चन्दकला को तुम काम ले निकालोगें तो हम लोग भी काम पर से निकल जायेगें । तो यह चन्दकला को वह निकाल नही सकते थे । अब क्या करे वह लोग साजिश किये कि यह बात ८ अप्रैल १९९१ शनिवार का दिन था हम लोग काम पर गये सुबह ८ बजे एक डेढ घन्टा काम किया थोडा सो मै बोली कि हम लोग अभी आते है । हम उधर बाथरूम की तरफ चले गये इन लोगों की तो साजिश थी इसके बारे में हम लोगो को जानकारी नही थी । हम लोग तो काम के लिए आये थे कोई गुण्डागर्दी करने के लिए तो नही थे हमकों तो मजदूरी करने के मतलब था वह लोग क्या किया जहाँ हम सप्लाई करनते थे इधर काम कम से कम २००-३०० मजदूर काम कर रहे है हॉल में हम लोगो का काम थोडा साईड हो जाता था तो थोडा बाहर साईड पड जाता था तो उधर भी ५०-१०० लोग काम कर रहे थे ।

इधर बहुत बडी बडी टंकियाँ बन रही थी सिरे का (सीरा) उस टंकी बन रहा था और टंकी बनाने के लिए बीम के लिए पूरे बडें बडें गढढें थे वह लोगे जिधर पूरे मजदूर लोग काम कर रहे थे । कम से कम २००-४०० मजदूर लोग काम कर रहे थे उसका सैटर यह लोग बन्द कर दिया मजदूरों को अन्दर बन्द कर दिये जब मजदूर को अन्दर बन्द कर दिया तो यह लोग क्या किये कि एक दूसरे को तलवार लेकर भगाने लगे, दौडाने लगे कि फलाँ को मारों इसको मारों उसको मारो । हम लोगों ने सोचा कि यह शोर कैसा हो रहा है आकर देखा तो एक दूसरे को मारने के

लिए ये लोग तलवार पकडें कोई राड पकडें हुए कोई कुछ कोई कुछ ।

पहले हम लोग घबरा गये कि यह क्या हो रहा है हम लोगों को पता नहीं चला कि यह लोग किसको दौडा रहे है तो वह हमारे साथी को दौडा रहे थे । क्योंकि वह थोडा अगवाही कर रहा था और उसकों इतना मार रहे थे कि बहुत अब मेरे से रहा नही गया । मै दौड कर गयी मै बोली इसकों क्यो मार रहे हो तो बोलता है कि यह ज्यादा नेतागिरी करता हे इसकों मारों तो मै बतायी कि जो सन्तोष ठेकेदार है, सुभाष ठेकेदार थे और उसका कैशियर सन्तोष गुप्ता/अशोक गुप्ता कैशियर और एक भाई कुमारी डिस्टलरी में ठेकेदार था तो ये चारों भाई इकटठा हो गये और इन लोगों का काम ही गुण्डागर्दी करना था यह सब इनकी साजिश थी तो मै बोली कि यह क्यो ऐसा सब हो रहा है तो बोले यह नेतागिरी ज्यादा करती है इसको मत छोडों उसकों जिसको मार रहे थे इतना मार रहे थे चाकू से राड से, बहुत मार रहे थे तो मै उसकों बचाने के लिए गयी तो वहाँ पर जो टीआई है वह मेरे पास आया और एक कटटा लिया ओर कटटे को लेकर मेरी छाती पर टिका दिया और फिर बोला इसको नही छोडूंगा तू बहुत नेतागिरी करती है । जब कटटा को टिकाया तो मै बोली कि यह सब क्या हो रहा है तो बोला तू ज्यादा नेतागिरी करती है न फिर मै बोली तो क्या मेरे को मारेगा । तो बोला हाँ तेरे को मारूंगा और टिका दिया ।

मै बोली तेरे मे दम है तो मार फिर मै दिमाग लडाई कि इसका पता नही यह मार ही देगा सही मे मार देता । तो वह ऐसे टिकाए हुए था तो मैने उसको एक थप्ड मारी उसको आशा नही थी कि चन्द्रकला मार देगी । मैने तो कटटा पकड रखा था जैसे ही मैने उस पर थप्पड मारी उसका कटटा नीचे गिर गया उसका दूसरा भाई देख रहा था कि मेरे भाई उस पर कटटा भी टिकाया था फिर भी उसने उस पर थप्पड मार दिया और उसने एक ईट उठायी और मेरे पर मार दिया सिर में बडी ईट से जब सिर मे मारा उसके बाद पुलिस टीआई उगेरा सब वहाँ जामून थाना का उस समय सलाम टी.ए. था वह तो पूरा कमीना था उधोगपति का पिटठू था वह जिसने ईट मारा था मै उसके पास चली गयी उस हालत में वह बोलता है कि मेरे भाई को तूने थप्पड मारा था, मै बोला तेरा भाई ही मेरे को कटटा टिकाएगा तो मै उसकी आरती थोडें ही न उतारूगी सिर में चोट लगी थी इस लिए दिमाग वहाँ पर चक्करा गया और मै वहा पर गिर गयी जब मै गिर गयी तो मेरे साथी लोग उठाये और उठाने के बाद बियर हाउस है वही पर वहाँ पर भी हमारे साथी लोग काम कर रहे थे वहाँ भी वह लोग ताला लगा दिया कि उस कम्पनी से इस कम्पनी न आये । जब ताला लगा दिये तो वह लोग पानी के लिए अन्दर ही तडप रहे है फिर हम लोग पानी बडी चुपके से दिये महिला लोग तब तक पूरे इन्डस्ट्री बैल्ट के मजदूर लोग इकटठा हो गये जब इकटठा हो गये तो उस सलाम ने क्या किया मेरे गिरने से पहले उसके सिपाही लोग मेरे एक हाथ उधर पकड लिया एक हाथ

उधर पकड लिया और दो आदमी तो मै बोली यह क्या जो कटटा रोड चला रहा है वह खुलेआम घूम रहा है ।

और मार खाने वाले को तुम पुलिस वाले लोग पकड रहे हो और मारने वाले को ऐसे ही छोड रहे हो क्या यही पुलिस वालों की डयूटी है । फिर मैने अपना हाथ एक दम हटा दिये और बोली कि मेरा हाथ छोड और उसके बाद मै गिर गयी और फिर भाई लोग वगैरा आये तो वह टी.आई और सलाम कहने लगे । सब मजदूरो को भी ले चलों थानें । चलो फिर हमारे साथी लोग बोले कि थाने में नही जायेगें बहुत हो गया थाना और फिर तुरन्त मैटाडोर किये और मुझें अस्पताल नही ले गये बल्कि कोर्ट ले गये फिर कोर्ट में ले गये तो मै बेहोश थी ओर वह भाई भी एक बेहोश था तो फिर वहाँ पर कलेक्टर का आर्डर था कि उपर लाओं फिर सब साथी लोग महिला लोग बोली तेरे को नीचे आना पडेगा ।

आप नीचे आईए यह ऐसी हालत में नही जा सकती आप नीचे आईए । फिर बोले इनकों अस्पताल में भर्ती करा दो तो फिर काफी प्रार्थना किये कि इन लोगों को ले जाओं हम लोग तो बेहोशी की हालत में थे फिर सरकारी अस्पताल में ले गये । वहाँ भर्ती किया और बाद में मेरे को होश आया भाई को जेन्टस वार्ड में रखो ।

Q- तुम्हारी नौकरी कब गई

Ans- फिर दूसरे दिन पहले मैनेजर आया फिर ठेकेदार आया । ठेकेदार ने बोला ठेकेदार सूटकेस मे पैसे लाया कि चन्द्रकला क्यों इस

लफडें में पडी हो । तू अपना देख और इन मजदूरों को छोड मै बोली उनको मै कैसे छोड दू । हम लोग मजदूर भाई है मजदूर बहन है । हम लोग एक के लिए सब है सब के लिए एक है । हम मजदूर सगंठन के है मजदूर ही रहेगें हम लोग । हमकों कुछ नही होना तो वहाँ पर वह वही चाल चला । मै बोली कि इसका उठा और सीधा चला जा नही तो ठीक नही होगा फिर मैनेजर आया श्रीवास्तव था उस समय उसकी पत्नि शोभा श्रीवास्तव डाक्टर है ।

तो वह बोला कि चलों हम आपकों सैक्टर ६ ले जायेगें सैक्टर ६ में आपका इलाज चलेगा वहाँ अच्छा रहेगा मै बोली हम यही ही ठीक है हम लोग मजदूर है हम लोगों के लिए सरकारी अस्पताल ही ठीक है हमकों वहाँ पर नही जाना है हम यही पर ठीक है । फिर वह चले गये अब जब हम लोग उनके कहने पर नही आये तो जो डाक्टर मेरा इलाज कर रहा था तो उस डाक्टर को सफेद अम्बेस्डर में ले गया और उसकों अपने अन्डर में ले लिया उसकों सब सिखा दिया । फिर जब वह डाक्टर आया तो कहने लगा कि आपकों नार्मल है कुछ नही हुआ है । आपकी छुटटी हो गया ।

मै बोली कि डाक्टर साहब मुझें इस अस्पताल में रहने और इस बैड पर सोने को कोई शोक नही है हमको ठीक लगेगा हम घर चले जायेगें आपके कहने से हम नही जायेगें तो मै वहाँ पर ११ दिन थी ८ अप्रैल को घटना हुआ फिर नियोगी जी को पता चला वह हम लोगों से मिलने आये वहाँ पूरे मजदूर साथी लोग

रहते थें हम लोगों के साथ तो नियोगी अम्मा आये उन्होने हम सब को देखा फिर सुबह ६ अप्रैल को नियोगी अम्मा जाकर केडिया गेट में बैठ गये कि चन्द्रकला को गोली मार रहे थे तो अगर तुम्हारे में दम है तो मुझें मारों मै यहाँ आ गयी हूँ ।

शाम तक वह वही पर गुस्से से बैठें रहे कि मजदूर साथियों के ऐसे क्यो कर रहे हो । किसी कि हिम्मत नही है ऐसा करना फिर भैया शाम को आ गये और मै वहाँ अस्पताल में ११ दिन थी । हम लोग जब ठीक हो गये तभी ही आये

Q- फिर ठीक होने के बाद वापस गयी फिर गया हुआ

Ans- ठीक होने बाद फिर कम्पनी में गये तब तक वह पूरे मजदूरों को निकाल चुके थे

Q- सब को निकाल दिया था

Ans- नही केवल महिला लोगों को जो सप्लाई में थी २५ जून को फिर एक और घटना घटी

Q- क्या हुआ था

Ans- २५ जून को हमारे साथी लोग रैली निकाले थे थाने की तरफ से हम लोगों की रैली जा रही थी जब थाने की तरफ से रैली जा रही थी तो वही टी०आई. जो हरामी था पूरें उधोपतियों का वह चमचा था (पिटठू था) सबसे आगें रैली में महिला लोग रहते है तो महिला लोग जैसे ही आ रहे थे तो वह अपनी गाडी को साईड में खडा कर लिया और खडा करके एक हमारी महिला साथी थी जो आगें बैनर पकडें हुए थी तो वह गर्भवती थी तो उसने उसकों लात मार दिया तो उसका गर्भपात हो गया ।

Q- वही पर

Ans- वही पर ही । फिर उसके बाद वह तो आगें जाने ही नही दे रहा था उनकी तो साजिश थी कि आज कुछ न कुछ करेगें उसके बाद लाठीचार्ज हुआ और बोले कि हम लोग तुम्हारी रैली को आगें नही जाने देगें और जाने नही दिया । और दंगा फसाद करने लगें और उसके बाद में पुलिस वालें हम लोगों को अरेस्ट कर लिये कम से कम ५००-६०० महिला और भाई लोगों को फिर उसके बाद में हम लोग जेल में थे

Q- कितने दिन

Ans- कम से कम १५ दिन थे ।

Q- फिर बाहर कैसे निकले

Ans- नियोगी जी ने रिहाई करवाई

Q- और उस पुलिस वाले के उपर कभी मुकदमा या कुछ हुआ

Ans- कुछ नही हुआ पुलिस में रिपोर्ट भी किया फिर भी कुछ नही हुआ वह लोग तो सब बिक चुके थे फिर २५ जून से हमारे सब भाई लोग मजदूरों को काम पर से निकाल दिया गया काम करने के लिए गये पर उन्होने निकाल दिया ।

Q- क्या बोला

Ans- काम नही है और गेट से अन्दर घुसने ही नही दिया

Q- फिर तब से तुम्हारी (तुम लोगों) की रोजी रोटी कैसे चली

Ans- फिर हम लोग सगंठन में आये ऐसा हो गया बोला तों फिर नियोगी जी समझायें पूरे मुखिया लोग समझायें कि सगंठन में ऐसा तो होता ही है लडाई लडेगें और लडकर हम लोग तो

केडिया जरूर मानेगा । ऐसा कहकर हम लोगों को समझाया गया फिर हम लोग संगठन का काम करते रहे ।

Q- फिर घर कैसे चलता रहा

Ans- बहुत तकलीफ होती थी जिसका परिवार अगर काम करे बेटा वगैरा काम करे किसी का पति काम कर रहे हो तो थोडा बहुत चल जाता है लेकिन हम लोगो का ऐसा नही था कि हम दोनों महिला पुरूष वहाँ पर काम करते थे इसलिए हमसें इनकों परेशानी होती थी

Q- तो उनका घर कैसे चलता था

Ans- चल जाता था ऐसे ही ले देकर पहले तो हम लोग सगंठन में बहुत ज्यादा समय देते थें घर का कुछ भी ख्याल रहता था कि क्या हो रहा है और क्या नही हो रहा है कुछ पता नही रहता था

Q- संगठन की तरफ से कोई मदद नही मिली थी

Ans- हाँ महिला लोगों को चावल मिलता था

Q- कितना चावल मिलता था

Ans- थोडा बहुत मिलता था शुरूआत मे सब लोगों को मिलता था जिसकी इच्छा अगर नही लेता था पर बहुत लोगों को मिलता था शुरूआत में । फिर उसके बाद जब लेबर आन्दोलन चला तो कहने लगें अपना छोटा मोटा काम करों तो उससे चल जाता था फिर वे नही लेते थे जिसका नही होता था वह ले लेता था ।

Q- यह चावल कहाँ से आता था

Ans- यह सगंठन राज हरा से आता था । खाददान मजदूर देते थे क्योकि शुरूआत में नियोगी जी वहाँ के मजदूरों से बातचीत

करके मीटिंग करके वही लोग संगठन को बढा रहे थें वे लोग पूरा मदद करते थें ।

Q- आप लोगों को संगठन को कुछ सालाना देना पडता था

Ans- नही नही केवल १२ रूपयें पर्ची के देते थे । उसके बाद कुछ नही देते थें ।

Q- कभी ऐसा नही लगा कि इसमें क्यों फस गयें अच्छा भला काम कर रहे थें ।

Ans- नही नही ऐसा कुछ नही लगा

Q- घर में भी किसी ने कुछ कहा कि किस चीज में आ गये हो

Ans- नही नही कुछ नही कहा ।

Q- फिर आन्दोंलन चलाया गया मोर्चा निकाला, धरना किया गेट पर आप लोग रोज जाते थे केडिया के कि हफतें में जाते थें क्या करते थें

Ans- जैसे हम लोगों का कार्यकम होता था उस हिसाब से जाते थे ।

Q- गेट पर जाकर क्या कहते थे ।

Ans- नारा लगाते थे उधोगपतियों के बारें में कि काम दो

Q- जब काम नही मिल रहा था काफी लेबर आन्दोंलन चला तो फिर कभी लगा कि कानून की बात उठा रहे है श्रम कानून की बात उठा रहे है तो कानून ने कोर्ट में ALL के पास या ट्राईब्यूनल मे जाना चाहिए इसके बारे में फिर क्या हुआ

Ans- यहाँ मुकदमा चल रहा था फिर जबलपुर में चला । रायपुर में चला ।

Q- उस मुकदमें में क्या हुआ

Ans- हम लोगों के पक्ष में आया ।

Q- तुम कभी कोर्ट जाती थी

Ans- हाँ

Q- कौन कौन सी कोर्ट गयी

Ans- मैं इन्दौर, जबलपुर, बिलासपुर में गयी हूँ

Q- जो इन्डस्ट्रीयल कोर्ट है रायपुर में वहाँ भी गयी

Ans- हाँ हाँ

Q- तो वहाँ कोर्ट में फैसला तुम्हारें हक में कितने साल बाद आया

Ans- ८-९ साल बाद आया

Q- फैसला क्या मिला है ।

Ans- ६५-३ के तहत फैसला यह मिला है कि मजदूर लोगों को जीने लायक कुछ दो

Q- मिल रहा है क्या सिस्टम है इसका

Ans- इसका सिस्टम यह है कि हम लोग बहुत लडाई लडें कोर्ट से जीत तो गये कोर्ट में फेसला आ तो गया लेकिन लागू नही हुआ । जाते थे मालिक से बोलने तो वह डरा देता था कि मेरे पास कुछ नही है फिर हम लोग आन्दोलन किये महिला लोग मुख्यमन्त्री का घेराव किये वहाँ

Q- कब

Ans- तीन साल पहले अजीत जोगी का जब पहले वह मुख्यमंन्त्री बना तो वह यही आश्वासन देता था कि हो जायेगा हो जायेगा । उसके बाद मजदूर उनकी चाल समझ गये थें कि जब तक हम सघर्ष नही करेगें तब तक ये लोग कुछ देने वाले नही है फिर हम लोगो का

कार्यक्रम बना । कार्यक्रम में हम लोग धरना में बैठ गये । धरना में अन्शन में बैठें । अन्शन में सुधा दीदी और मै दोनों जने बैठें । वहाँ हमारे मजदूर साथी लोग सब रहते थें ११ दिन तक हम अन्शन में बैठें बैठक में हम लोग जाते थें तो मालिक लोगों का वही टालमटोल करना पहले मैनेजर आता था फिर उसके बाद में मालिक आया । फिर मैनेजर अपना रोना मालिक का टाल मटोल करना फिर हम लोग बोले कि जब तक केडिया डिस्टलरी से पेमेन्ट नही होगा तब तक यह अन्शन नही टूटेगा चाहे वह कितने भी दिन हो जाये ।

Q- केडिया में कितने मजदूर साथी थें

Ans- कम से कम २००० मजदूर थे ।

Q- केडिया क्या कहता था क्यों नही दे रहा है ।

Ans- बोलता था मेरे पास कुछ नही है अभी

Q- क्या फैक्टरी चल रही थी

Ans- फैक्टरी कुमारी डिस्टलरी चल रही थी केडिया डिस्टलरी बन्द हो गयी थी

Q- कब बन्द कर दिया था

Ans- एक साल पहले बन्द कर दिया था तब भी हम लोग बोले कि जो हमारा हक है वह हमकों मिलना चाहिए जब कोर्ट ने फेसला दे दिया है उसके बाद भी क्यो नही मिल रहा है । और क्यों नही मिलेंगा हम लोग लडाई लडेंगें । लडाई लडकर लेगें पर अपना हक लेकर रहेगें । हमारी महिला बहिन भाई लोग पूरा मोर्चा वालों ने ठान लिया कि हमकों यह करना है तो करना है ।

अन्शन में बैठने के बावजूद भी हम बातचीत में जाते थे और फिर पाँचवें दिन मुख्यमन्त्री के निवास पर भी गये बातचीत हुआ फिर भी मान मनावा नही हुआ हम लोग उनका रवैया देखा लिया कि कैसे चल रहा है फिर हम लोग वहाँ से आ गयें फिर उसके बाद वहाँ से मालिक लोगों को बनाये दो नही तो नही तो हमरा कोई ठिकाना नही है । मुझें तो पता है जब वह प्रधानमंन्त्री को नही छोडतें तो मुझें क्या छोडेगें फिर यहाँ बैठक में बुलायें और फिर यहाँ केडिया डिस्टलरी से शुरूआत किये फिर जब यहाँ पेमेंन्ट ले रहे थें वहाँ हमारा अन्शन टूटा इससे पहले जो पैसा नही मिल रहा था यह बोल करके कि यह बन्द कम्पनी है तो हम लोग होली के समय भी धरना में बैठें रहे ।

हमारे बच्चें लोग महिला लोग पुरूष लोग साथी लोग सब हम लोग घर में कोई भी चूल्हा नही जलाए न ही कोई घर में था सब लोग हम त्योहार यहाँ ही मनायेगें यही पावर हाउस में धरना पर बैठें थे फिर बातचीत के दौरान जो हमारा पहला ६५-३ के तहत ११ महीनें से पहले का पैसा इनकों एक साथ दो ।

फिर बाद में वेतन देना तो यह लोग टाल मटोल करने लगें कि नही हम ११ महीनें का पैसा नही दे सकते फिर बैठक वगैरा करके ऐसा करना है । उगेरा उगेरा फिर हम लोग कुमारी में गयें तो हम लोग ६ दिन तक गेट के पास धरना पर बैठें थें कि पैसा लेकर ही रहेगें खाना पीना सब वही ही हुआ ।

फिर वहाँ बैठें और उनके साथ बातचीत किये फिर ५-५ हजार रूपयें एक साथी लोग को दियें ऐसे किस्त बांधी थी कि पहली किस्त ५ हजार रूपयें देना है । दूसरी किस्त ३ हजार देना है । फिर १५०० देना है ।

Q- हर मजदूर को टोटल कोर्ट ने कितना दिया

Ans- हर मजदूर को मालिक लोग दिलवायें कम्झी ५ हजार देना कुमारी ने मजदूरों को थें । दोनों में केडिया डिस्टलरी भिलाई में और कुमारी में पर वह केवल वहाँ वाली को दिया यहाँ वाली को तो आज भी नही दे रहे है ।

Q- तुमकों अभी भी नही मिला ।

Ans- अभी भी नही मिला है । केवल अभी जो ६५-३ के तहत है वही मिल रहा है । जो ११ महीने पहले का पैसा था हमारा वहाँ एंडवास है । हमारी कम्पनी भिलाई में ।

Q- उसका आर्डर हो गया है ।

Ans- हो गया है पर दे नही रहे है । कम्पनी बन्द है वगैरा बोल देते है ।

Q- जब पैसे लेने जाते है तो कहाँ मिल रहे है ।

Ans- कम्पनी में ।

Q- ठीक से देते है ।

Ans- वहाँ पर भी नौटंकी करते है । कभी बोलते है कि ३० हजार ले जाओं कभी बोलते है २० हजार ले जाओं फिर हम लोग कम्पनी में जाकर दबाव देगें और बैठ जायेगें और कहेगें कि आज कम्पनी में काम नही करने देगें तब वह जाके वह ५० लोगों को

पैसा देगा कम से कम एक महिना लग जाता है । पेमेन्ट लेने में । तब तक एक महीना और ज्यादा हो जाता है ।

Q- तुम जब कोर्ट जाती थी की बार इस केस के चलते तो कही पर तुम्हारी गवाही वगैरा देनी पडी या शपथ पत्र देना पडा

Ans- नही मेरा तो कुछ नही हुआ

Q- जब तुम कोर्ट कचहरी जाती थी एक मुखिया के रूप में सघर्ष करने तो तुमकों कोर्ट का माहौल देखकर कोर्ट में जज बैठें वकील बहश कर रहे है । तुमको इन्दौर हाईकोर्ट का माहौल वकालों को देखकर तुमकों क्या लगा कि यहाँ पर क्या सिस्टम चल रहा है कुछ समय में आ रहा था श्रम कानून की बातें समय में आयी क्या लग रहा था तुम्हे वहाँ

Ans- मेरे को वहाँ यह अन्दाजा लगता था क्योंकि मह तो कम पढें लिखे है पर मेरे को यह अन्दाजा लगता था कि पैसे वालें कोर्ट है । हम देखते थे कि हमारा मालिक है । कितना वकील खडा कर रहा है । वह वहाँ ५० वकील खडा कर रहा है और हम सगंठन के जितने है उतने ही है ।

Q- आपकी तरफ से कौन वकील जाते थें आपके पास वकील करने के लिए पैसे थें

Ans- नही नही पैसा कहाँ से आयेगा वैसे हमारा साथ वकील लोग भी देते थें । दूर दूर से आते थे और हमारा साथ देते थें । पर हम तो देखते थे कि हमारे जैसे भी है वकील भाई हो चाहे वकील बहिन हो जो मदद करे है । चाहें किसी भी रूप में करे उसकों

हम देखा रहे है और वह पैसे जो ले रहे है पैसे वालें का भी वकील हम देखा रहे है ।

और जज का जो दिमागी हाल है वह तो थोडा समय में आता था ।

Q- जज कैसे लग रहा था कि वह तुम्हारें केस को ध्यान दे रहे है । सीरीयस देखा रहे है । कि कितने मजदूर लोगों का केस है उसके हाव भाव से क्या लगा ।

Ans- हाव भाव से तो यही लगता था कि यह मालिक लोग का साथ दे रहा है । क्योकि हम देखा रहे है कि इनके तने सारे वकील है और जो खडा कर रहे है । चाहे वह गवाही के रूप में या कुछ भी हमकों पहले से ही मालूम है । कि नियोगी जी का जो हत्या हुआ है उसमें यह लोग कैसे कैसे किये इससे तो पता लगता था कि यह लोग क्या फेसला दे रहे है । या देगें कोर्ट में जो न्याय मिलता है । वह तो सीटी के वगैर चलती है । जज का फैसला जो भी कानून के लिखा उसकों इन लोगों को देना रहता है । देने के मकसद से तो नही लगता कि आसानी से दे देगे वहाँ भी चाहे हम लोग दिल्ली में जाए चाहे भोपाल में जाए चाहें जबलपुर के कोर्ट में जाए चाहें इन्दौर के कोर्ट में जाए वहाँ भी हम लोग सघर्ष करते थे ।

Q- क्या सघर्ष करते थे ।

Ans- वहाँ भी दिखाना पडता था कि छत्तीसगढ और भिलाई की जनता यहा आयी है ।

Q- तुमकों लगता है कि अगर वह सगंठन नही होता तो यह आर्डर मिलता

Ans- नही नही

Q- यह आर्डर इसलिए नही मिला क्योकि कानून कहता कि तुमकों यह मिलना चाहिए तुमकों लगता है सघर्ष करके आर्डर मिलता है ।

Ans- हॉ सघर्ष करने से आर्डर मिला

Q- क्या उसके बिना मुमकिन नही था

Ans- हॉ क्योकि मेहनत हमारे वकील भाई बहिन कर रहे थे पर उनकों तो उधोगपति अपने जेब में ले लिये पैसों के बदोलत उनकों दबा रहे है । तो हम लोगों को चारों तरफ से सघर्ष कर रहे है ।

Q- जैसे कानून में कहते है सविधान में कहते है किताबों में लिखा होता है कि कानून के सामने सब बराबर है कानून के लिए सब एक समान है कहते है सविधान में न ऐसा ही लिखा है तुम्हारा इस पूरे सघर्ष में जो अपना अनुभव रहा है तुम्हे क्या ऐसा लगता है कि इस देश में सबके लिए एक ही कानून है । या कानून के सामने बराबर होते है । जब पेश होते है तुम्हे लगता है कि ऐसा सही है कि कानून के सामने अदालत के सामने तुम हो या केडिया हो सब एक समान है । कोर्ट दोनों में कोई फर्क नही करता है । कोर्ट दोनों को एक जैसा पूरा जो न्याय प्रणाली है चाहे वह पुलिस है चाहे वह कोर्ट है, चाहे वह कानून है चाहे वह वकील है चाहे वह जज है क्या वह सबकों एक जैसा देखकर काम करता है । क्या सबके लिए एक जैसे सुविधा है उसमें तुम्हे क्या लगता है ।

Ans- नही लगता

Q- क्या लगता क्या है ।

Ans- जहाँ भी हम लोग गयें है मालिक लोग तो वह पैसे वालें है । पैसे के बदोलत वह लोग जो भी कर लेते है अब अन्दर की अन्दर क्या जज को भी खारीद लिए जैसे नियोजी की हत्या का केस चला वहा भी हम लोग जा जाकर देखाते थें । हालाँकि हम लोग कम पढें लिखें है । कुछ कम समझतें है लेकिन पर इतना हमकों लगता है कि यह जितने भी सब मालिक के ही पक्ष में है क्योकि हम देखें कि नियोगी जी के हत्यारें को क्या सुविधाए देते थें यह लोग जैसे खडें नही रहना है बैठें है तो बैठें ही रना है और दादागिरी के साथ वह लोग पेश आते थे उसके बावजूद भी जज देखा रहा है । कानून जब एक के लिए है, वकील लोग भी है । वहाँ पर तो उनकों तो ऐसा लगता था कि पीछे से पीठ थपथपाया जा रहा है । कि मेरा वकील तू है ।

Q- यह जो कानून का पूरा सिस्टम है क्या बिना वकील के कोई मजदूर अकेले जाके अपने कम्पनी के खिलाफ कोई केश वगैरा कर सकता है ।

Ans- नही नही

Q- अगर किसी के पास वकील को तो फीस देने से ही मिलता है तो मजदूर के लिए फिर क्या सुविधा है क्या कोई प्रणाली में सुविधा है कोई वकील मिलते है यहाँ पर कोई लिगल एड का सिस्टम है

Ans- नही नही

Q- आप लोगों को अपने काम के लिए अपने प्रतिनीधि के लिए कैसे वकील मिले ।

Ans- उसमें हमारें सगंठन की तरफ से बातचीत किए जैसा कि हमारे दिल्ली से ही गॉवर दीदी है जैसे भी हमकों वकील मिले है । चाहें महिला के रूप में हो चाहें भाई के रूप में हो वह सहायता के रूप में ही मिले है ।

Q- क्या कोई बिना संगठन के रूप आप कोई ऐसा मुकदमा जानते जिसमें कोई मजदूर बिना संगठन के जरियें अकेले जाके अपना कोई केश का सभा बिना संगठन के जाना मुमकिन है केश डालना नही होता आप संगठन की मैम्बर नही होती । आप संगठन में सघर्ष नही कर ही होती तो क्या आप अपना केस लड सकती

Ans- नही

Q- क्यों

Ans- हम अकेले हो जाने में आप एकता में बहुत ताकत है अकेले व्यक्तिगत में अलग है ।

Q- आपकों श्रम कानून में क्या होना चाहिए क्या नही । इसकी जानकारी आपकों कैसे मिली

Ans- संगठन से

Q- संगठन में कौन बताता है

Ans- संगठन में नेता लोग बताते है ।

Q- क्या बताते थे ।

Ans- यह कि यहॉ श्रम कानून लागू नही हो रहा है श्रम कानून में यह लिखा है आपकों कुछ नही मिल रहा है यहॉ यह लोग श्रम कानून

का उल्लंघन कर रहे है । आपको रोजी रोटी भी नही दे रहे है । जो हक में मिलना चाहिए वह तो मिल ही न रहा है । पूरा समझाते थे कि लोग क्या क्या रवैया अपनाए ।

Q- यजो भिलाई में फायरिंग गोली काण्ड हुआ था जुलाई १ १६६२ में उस वक्त आप उस आन्दोलन में शामिल थी क्या हुआ था उसमें ।

Ans- वहाँ हम लोग श्रम कानून लागू नही हो रहा था तो उसके चलते रेल पटरी पर बैठें एक महिना पहले हम लोग वहाँ संघर्ष की तैयारी में लगें ६ दिन जामून में रहना वही पडाव दर पडाव ८ दिन छावनी में रहना सारदा पार्क में रहना पूरे मजदूर साथी लोगे वही रहना, खाना पीना, मीटिंग वगैरा वही चलते थें सोना भी वही पडाव दर पडाव बीता रहा फिर उसके बाद में १ महिना और ६ दिन हम लोगों का चला फिर आखिर में १ जुलाई १६६२ को हम लोग रेल पटरी में बैठें ।

रेल पटरी में बैठें तो हमारी सघर्ष में तो रणनीति बन ही गया था तो हम लोग वहाँ बैठें सुबह से लेकर शाम तक पूरी पुलिस फोर्स आयी हम लोगों को बहुत हटानें की कोशिश किया फिर भी हम लोग नही हटें जब तक हमें रोजी रोटी नही मिल रही है । उसके लिए चाहिए हमें यहाँ कुर्बानी देनी पडें तो सही है ।

हम नही हटेगें फिर उसके बाद में ६ बजे साय पहले वह लोगे आसू गैस छड़ेडें आंसू गैस से हमारे साथी लोग वहाँ से नही गये फिर वे लोग पथराव वगैरा करने लगे यहाँ तक कि

मजदूर लोगों के बीच में मालिक लोगों की तरफ से गुण्डा लोग आ गये । साइड उगेरा में हम लोग उनको संगठन में घूसने नही दिये रेल पटरी में नही घुसने दिया पर वह लोग साईड से यह दंगा फसाद करने लगें कि सरकारी बसों को जला दों ट्यूब टायर को जला दों किसी को मार दो ऐसा करने लगें क्योकि फिर दंगा हो जायेगा ।

पर हम लोग पहले से ही होशियार थे हमारे साथी लोग वहाँ से हटें नही तो फिर आंसू गैस छोडें फिर भी हमारे साथी लोग वहाँ से नही हटें फिर पथराव किया कि हटेगें फिर भी जब नही हटें तो वह लोग वहाँ से फायरिंग करना शुरू कर दिया जब काफी गोली चला दी तो फिर हमारे साथी लोगों ने कहा कि यहाँ से हटों फिर तुम लोग वहाँ से हटे ।

जो जो साथी लोग शहीद हुए है वह लोग गिरते जाते थे तो उनको हमारे साथ लोग उठा उठाकर ले जाते थें जलेबी चोक बसन्ता से होते हुए साथी लोग सब इधर उधर थे तो वहाँ मै कम से कम ७ हमारे साथी लोग शहीद हुए थे मै वहाँ पर खडी ओर क्या करते साथी लोगों (शहीद लोगों) को ले जाना भी है । वहाँ कोई नही रोक रहा था गोली काण्ड हो गया तो पुरा दंगा हो गया ।

फिर मै भाई लोग को बोलकर के प्रार्थना करके कि इनकों ले जाओं तो वह बोले नही ले जायेगें हम लोग तो बीच में हम लोग आटों उगेरा ठेला जो भी मिल जाए जो भी मिल जाए उसमें इनकों डालों और अस्पताल ले जाओं तो मै कम से कम ७ भाई

लोग को उसमें जिनकों किसी को गोली टॉग में लगी किसी के हाथ में लगी थी उनकों हम लोग अस्पताल भिजवाते गये कि इनकों जल्दी जल्दी भर्ती करों फिर पुलिस वाले उनकों रोक दिया ले जाने ही नही दिया रोक कर उन सब को गिरफतार कर लिया ।

Q- तुम भी गिरफतार हुई थी

Ans- नही उस दिन नही हुई थी फिर उसकों ले गये फिर हम लोग इधर उधर चले गये तो हमारे कैम्प के जितने कैम्प मे है अधिकतर लोग हमारे मजदूर साथियों की सहायता किए ।

जो पार्टी वाले थे जैसे कांग्रेस भाजपा वह कोई कोई इतने निर्दयी थे वह ठीक नही थे पर यहाँ की पूरी जनता सब अपने अपने घर में मजदूर साथियों को किसी ने १० साथी किसी ने ७ साथी किसी ने २ साथी ऐसे ऐसे पूरी मदद करके रखों थे ।

और पुलिस तो अपना काम कर रही थी खोजना सक्कों कि कहाँ चले गये है तो वहाँ हंशीदास नगर में ज्यादा ही आंतक है और जामून में भी ।

Q- तुम कब पकडी गयी

Ans- मै नही पकडी गयी पर हम लोग उसके बाद दूसरे दिन ७-८ बज गये थें घर आ गये थें अत संगठन में इतना बडा काण्ड होना यह पता ही नही था फिर परिवार में मेरा ननोदी भाई वगैरा पकडकर ले गये और ताला बन्द कर दिया कि यह फिर चली जायेगी भाग जायेगी ।

फिर मुझें तो यह पेरशानी हो रही थी कि पता नही वहाँ क्या हुआ कैसा हुआ फिर मै सुबह उठकर पुलिस वाले तो यहाँ चक्कर लगा ही रहे थे उनकों पता था कि चन्द्रकला का घर इधर ही है । तो मै घूंघट डालकर पूरे मजदूर साथियों को देखाती थी कि कहाँ कहाँ है तो वही पर चावल देना वैसा तो बहुत ही कम लोग कर पायें परन्तु जिसके घर में वह लोग (मजदूर लोग) रूके थें वह पूरी व्यवस्था के साथ में रखाते थें

Q- फायरिंग के बाद कैसा माहौल था पूरे वर्करों में ।

Ans- क्फर्यू लग गया था तुरन्त क्फर्यू लगा लगने के बाद माहौल तो सही नही रहेगा उसके बाद हम लोग पूरे घर घर में जाकर अपने साथी लोगों को देखाना कि कौन कहाँ पर है कही चावल पहुचाना कही कुछ पहुचाना

Q- फिर उसके बाद यहाँ पर इनक्वारी बैठी थी इस पर

Ans- हाँ

Q- क्या तुम कभी उस इनक्वारी में गयी थी ।

Ans- हमेशा जाती थी ।

Q- क्या तुमने उसमें गवाही दी थी ।

Ans- नही

Q- जब तुम गोली काण्ड की इन्क्वारी सुनने जाती थी तो तुमकों क्या लग रहा था कि वह समझ रहा कि किस तरह क्या हुआ गोली काण्ड क्यों हुआ यह सब बातें जज साहब समझ रहे थे ।

Ans- हमने जब देखा संगठन के आन्दोलन में कि जो रवैया यह लोग अपनाए है । चाहे वह नियोगी जी हत्या से लेकर हो चाहे गोली

काण्ड से हो वहाँ कोर्ट में तो न्याय होना चाहिए न्याय मिलेगा इसलिए जनता अपनी सोच बना के रखाती है पर हम गोली काण्ड हुआ उसकों सुननें के लिए हमारी पूरी जनता जाती थी कि क्या होगा वो वहाँ वह हमारे साथी लोगों को मुखिया लोगेां को अन्दर कमरे में बन्द कर देना और वहाँ अकेला गवाही देना और पूरी जनता जो आती थी वह यही सोच कर आती थी कि हम कुछ तो सुने कि हमारे आन्दोलन में क्या हो रहा है कुछ भी तो सुनवाया नही जाता था ।

Q- जब क्फ्र्यू लगा उस समय भी तुम मोहल्ला की मुखिया थी

Ans- हाँ

Q- जो पूरा मोहल्ला जो संगठन में मोहल्ला मुखिया बनाने की प्रकिया है उसने उस समय कुछ काम आ सका वह सिस्टम जो बना रखा है ।

Ans- हाँ हाँ

Q- क्या क्या काम आया

Ans- हम लोगों का आन्दोलन का शुरूआत हुआ तो नियोगी जी ने बोला कि आप मोहल्ला वाईज आप लोग ग्रुप बनाओं तो हमारा मोहल्ला बाईज ग्रुप है ।

Q- उससे क्या फायदा होता है ।

Ans- बहुत फायदा होता है ।

Q- जैसे

Ans- जैसे हम लोगों का ग्रुप बना ग्रुप में हम लोग १००-१०० का ग्रुप बना दिया है तो हम लोगों का ६४ मौहल्ला है ६४ मोहल्ला में

हम लोग अलग अलग १००-१०० के ग्रुप बने है । और उस ग्रुप मे जैसे १०० है तो उसका एक मुखिया है १० के पीछें मुख्या है ५ के पीछें मुखिया है ।

उसमें अगर कभी भी हम लोग संगठन की तरफ से सूचना आ गया तो १०० के पीछें मुखिया के मिलेगा १० के ५ के पीछें फिर उसके बाद हम लोगों की मीटिंग चलती है कि यह करना है वह करना है । धरना देना है कि रायपुर जाना है कि कम्पनी जाना है जो भी सूचना है सब इसी के माध्यम से मिलता है ।

Q- जो गोली काण्ड हुआ उसके बाद जितने भी आपके नेता थे उनकें से कई तो पकडें गये थे उसकी वक्त और कईयों के पीछें पुलिस लगी हुई थी तो उस वक्त आपने आन्दोलन कैसे संभाला । किन लोगों ने मिलकर सभाला ।

Ans- वह लोग जिनकों पकडकर ले गये थे हम लोग जितनी भी महिला और भाई लोग थे जैसे मै हूं तो मुझें हर पुलिस वालें पहचानते है । कि यह चन्दकला है तो हम लोग घूंघट डाल लेते थें ओर डाल करके जो साडी नही पहनना वह साडी पहन लेते थें और भाई लोगों का भी ऐसा ही रहता था कि हमकों पकड न ले वह अलग भेष में रहते थें और अलग अलग भेष में रहकर एक दूसरे से सम्पर्क रखाते थे जैसे यहाँ पर हम लोग अंडर ग्राउन्ड करके मुखिया साथी को रखें है । चाहें वह विधायक जी हो चाहे अनूप जी हो चाहें सुधा दीदी हो उनकों हम लोग रखे कि किसी अगले को पता नही चले ओर पता नही चल पाता था कि हम लोग इनकों यहाँ रखें है ।

Q- जो मोहल्ला में मुखिया का सिस्टम है क्या वह उस वक्त काम आया था

Ans- हाँ आया

Q- अक्या तुम दो एक बार चुनाव भी लडी थी

Ans- हाँ

Q- क्यो तुम चुनाव मे उतरी तुम्हें तो समय है कि यह सारी प्रणाली ऐसे चलती है । पूंजीवादी के हाथ में हो तो तुम लोग क्यों चुनाव में भाग लेते हो ।

Ans- हम लोग चुनाव में भाग इसलिए लेते है क्योकि हम लोग यह नही चाहते है कि जैसे कॉग्रेस, भाजपा चाहती है कि हम सीट में बैठें हम लोग वहाँ राज करे उनका लूटने का मकसद है और वह लोग जनता को गुमराह करते है । गुमराह करने का मकसद है ।

हम किसान मजदूर लोग जो संगठन बनायें है जो लोग हम कपंनियों में काम कर रहे है चाहें वह गांव के खेती खलिहाल में काम कर रहे है उसको हम लोगे और बढावा देगे क्योकि आज हम आने संगठन में देखा रहे है कि हम लोग किसान का काम करते है । मजदूर का काम करते है । कौन करता है यह भाजपा काग्रेस करती है सिर्फ यह लोग सीट लेने के लिए है । अभी जब चुनाव चल रहा है तो कितनी देशभक्ति की बात कर रहे है । कैसे कैसे बात कर रहे है । परन्तु क्या वह यह लागू कर पाते है । यह लोग उधोगपति के बल पर ही चुनाव लडते है । पर हमारा ऐसा नही है हमारा गरीब संगठन है । हम लोग गरीब स्तर के लोग है । हम लोग गरीबी को झेलते हुए हमारे साथी लोग जो

अभी भी चुनाव लड रहे है किसी के पास बैनर नही किसी के पास पोस्टर नही कही वाल पेन्टिग नही कही कुछ नही उसके बावजूद भी हमारे मजदूर साथी लोग एक दूसरे की मदद करके चुनाव लडते है । इसलिए लड रहे है कि जो यहाँ के लूटेरू लोग है यह मालिक के लोग है पूरी व्यवस्था उनकी ही है और पूरी व्यवस्था के साथ में हम लोग को चलाना है ।

जो हम सघर्ष कर रहे है । हमें पता है कि न कॉग्रेस और न ही भाजपा काम की है सिर्फ हम अपने सघर्ष के भरोसे ही हम इन लोगों के सामने टिक पायेगें तो क्यो न हमारे बीच के ही मजदूर साथी आगें आये और आगें आकर हमारी आवाज को विधान सभा तक पहुचाए लोक सभा में पहुचाए । काग्रेंस भाजपा नही पहुच पायेगी । हमारे बीच के साथी लोग ही पहुच पायेगे । और वैसे ही हुआ जनक लाल ठाकुर जी विधायक भी है और वह विधायक रहते हुए भोपाल में गये है ।

Q- तुमने जो दो बार चुनाव लडा तो तुम्हारा क्या अनुभव रहा कि इस देश में डेमोक्रेशी है जनतत्र है लोगों का राज है लोग मत देकर चुनते है कौन नेता होगा जो तुम्हारा पूरा इस प्रकिया मे कैसा अनुभव रहा कि जो पूरा चुनाव का सिस्टम है क्या इसमें सही में लोगों का जो अपना प्रतिनिध होता है जिसकों लोग चाहते है क्या उसकों लोग पहुचा देते है । राज्य सभा या विधान सभा तक ।

Ans- मेरे को ऐसा नही लगता है क्योकि काग्रेस राष्ट्रीय पार्टी है भाजपा राष्ट्रीय पार्टी है यह लोग सिर्फ जो अपना मत लेते है वह

जनता से नही लेते है । यह तो कही शराब बंट रही है तो कही कपडा बट रहे है । कही कुछ, कही कुछ बट रहा है जब तक वोट है तब तक फिर उसके बाद तो गरीब जनता का पूछने वाले नही है । तो हम कैसे कहे कि जनता अपने मत से ही बोट देते है मै तो ऐसा नही मानती हूँ क्योकि पैसे के चलते यह लोग बोट को खरीद लेते है और खरीद कर वह लोग विधान सभा या लोक सभा तक पहुचते है ।

Q- तुमकों क्या लगता है कि इतने साल से यहाँ पर सघर्ष चल रहा है क्या श्रम कानून लागू करने में भिलाई के ओधोगिक माहौल में कोई फर्क आया है । मजदूरों की जागरूकता बढी है क्या इस आन्दोलन को चलने में और श्रम कानून लागू करने में तुमकों कोई बदलाव नजर आ रहा है । पहले बताओं कि मजदूरों को जागरूकता में तुमकों कोई मजदूर को खुद जो समझ है श्रम कानून के बारे में पता चला है जब तुमने काम करना शुरू किया और आज मै तुमकों जो आज की मजदूरी पीढि तुम्हारे बच्चें काम करते है तुमकों क्या लगता है उनकों तुमसे ज्यादा जानकारी है । श्रम कानून के बारे में ।

Ans- जो हम लोग पहले करते थें पहले लड करके जो हमने श्रम कानून लागू करवाया तो श्रम कानून हम लोग लड करके अपने सघर्ष के बदौलत जो कुछ भी किये अपने छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा के साथ मे हम लोग जो भी काम किये वह तो हम मानते है कि जागरूकता हुआ ।

क्योकि जो मै आज बात कर रही हूँ तो मै पहले से ऐसी नही थी केवल घरेलू महिला थी और घर तक ही सीमित थी और आज जब सगंठन में मै आई हूँ तो मै अपने बीच में जो बात कर रही हूँ यही मेरे प्रति जागरूकता ही लग रही है

अब हमारे साथ ऐसी ऐसी महिला है वह कभी घर से बाहर नही निकली थी वह कुछ नही जानती थी और आज वह टीआई और कलेक्टर से ऐसी धमका कर बात करेगी चाहे वह प्रधानमन्त्री हो उससे बात करने की हिम्मत है क्योकि छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा है इसलिए हम लोगों को ज्ञान आया और हम जाने कि यहाँ उधोग क्षेत्र में श्रम कानून लागू नही हो रहा है । और हम लडाई के माध्यम से ही हो चाहे कुछ के माध्यम से लोग लागू करवाये और आज हम ले रहे है ।

Q- क्या कुछ जगहों पर श्रम कानून लागू हो रहा है या अब भी कम्पनी में ज्यादा सुधार नही हुआ है ।

Ans- ज्यादा सुधार तो नही हुआ है क्योकि कोर्ट तो फेसला दे देता है पर यहाँ पर हम लोग लागू करवाते है तो लागू कराने के लिए कोर्ट से फेसला तो मिल गया पर यहाँ पर हम लोगों को लागू करवानें में हम लोग ज्यादा मेहनत करते है ।

Q- क्या आज भी ठेका मजदूरी ज्यादा है या स्थायी मजदूरी ज्यादा है।

Ans- ठेका मजदूरी ।

Q- ठेका मजदूर को बेतन हो काम का समय हो चाहे हाजरी कार्ड हो ऐसी कोई सुविधा है ।

Ans- नही नही

Q- तुम मजदूर भी हो और महिला भी तो तुम्हारा जो यहाँ छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा का आन्दोलन है इसमें महिला की एक विशेष परिस्थिति होती है समाज में जिसमें वह भी गैर बराबर है पुरूष के सामने चाहे वह पुरूष मजदूर हो चाहे कोई और तो क्या तुम्हारा आन्दोलन भी यह बात मानकर चलता है । क्योकि औरतों के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए । विशेष सोच की जरूरत है ।

Ans- हाँ

Q- किस तरह के कार्यकम जो तुमने महिलाओं के साथ किये है

Ans- हाँ बहुत कार्यकम किये ।

Q- जैसे क्या क्या

Ans- जैसे महिलाओं के साथ हमने संगठन के तहत जो काम किये हम लोग शराब बन्दी आन्दोलन भी किये और दूसरी बात यह है कि नियोगी अम्मा कभी भी महिला और पुरूष में अन्तर नही समझते थे । बराबर का दर्जा दिया जैसे भाई अगर मीटिंग में जा रहे है चाहे वह मालिक के साथ बैठक हो चाहे वह किसी अधिकारी के साथ हो महिला को साथ में लेकर चलते थे और उस बैठक में ले जाते थे ।

Q- कुछ महिला के विशेष मुददे होते है जैसे किसी के घर में आदमी मारपीट करते है तो क्या वह मुददे आप अपने छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा के सामने यह बात ले जा सकते है कि सिर्फ श्रम कानून और हक की बाते ही करते है ।

Ans- नही नही सब करते है जो भी समस्या आ जाती है उसकों हम लोग हल करते है जैसे मोहल्ला में लडाई हो गया उसका भी हम लोग समाधान करते है कितने ही ऐसी महिलाए आते हो । कितनों के घर में लडाई हो रहा है । कोई झझंट हो गया सास बहू के साथ हो गया पडोसी के साथ हो गया वहाँ जाकर हम लोग फिर थाने में जाकर अधिकारी लोगो से बातचीत करके उस समस्या का समाधान करते है ।

Q- तुम्हारा यह जो पूरा अनुभव रहा है तुमको क्या लगता है कि कोर्ट वगैरा में जाने से फायदा है । मजदूर को कि ज्यादा नही है ।

Ans- मजदूर जहाँ तक लडाई लडेगा और लड रहे है तो कानून के तहत ही लडेगा और अभी सुनने को मिला है कि दिल्ली में पास हुआ है कि मजदूर लोग ट्रेड यूनियन नही कर सकता तो ट्रेड यूनियन लडाई नही कर सकते । जब कानून दिल्ली में है और ट्रेड यूनियन लडना चाहे जो कानून में लिखा है उसके बावजूद भी हमारे सगंठन में चाहे व कोई भी मजदूर संगठन हो वह मजदूर संगठन है तो है । उसमें बहुत दिन तक आती है सघर्ष करके लडाई लड कर कानून को लागू करवाना तो अब कानून दिल्ली में पास हो गया है कि ट्रेड यूनियन नही होना चाहिए तो फिर मजदूर क्या करेगा ।

Q- आपकों यह जानकारी कौन देता है कि नया कानून क्या बन रहा है । दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट ने कैसा फेसला दिया यह जानकारी आपकों कहाँ से मिलती है।

Ans- अम्मा लोगों से

Q- क्या आप लोगों को हफते या महीने में मीटिंग होता है क्या सिस्टम है ।

Ans- हफतें में मीटिंग होता है और जब भी हम लोग संगठन में बैठें हो जब बुलाओं मीटिंग में जाना होता है जैसे चर्चा वगैरा होना है ऐसा हुआ वहाँ हुआ और भाई लोगों के बहन लोगों के बीच में जो बात उठता है उससे जानकारी हो जाता है बताते भी है ।

Q- जो मुखिया होते या जो लोग ज्यादा समय देते है आप लोगों को यूनियन की तरफ से कोई स्टाई फण्ड वगेरा भी मिलता है

Ans- नही नही

Q- और भी कही लाल झन्डों वाली पार्टिया है भिलाई में छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा के अलावा और भी कई ट्रेड यूनियन है क्या कोई फर्क है । छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा का आन्दोलन करने का नजरिया और बाकी लाल झन्डें वाली पाटियों का तुम्हारी नजर में कोई फर्क है कि कोई भी लाल झन्डें की पार्टी को ज्वाईन कर लों तो इसी तरह का आन्दोलन या सघर्ष होगा ।

Ans- नही लाल झन्डे में और हमारे मे फर्क है क्योकि हमारा संगठन जो है वो मजदूर को लेकर चलता है और मजदूर और मुखिया के बीच में कोई फर्क नही है क्योकि जो भी करना है मजदूर को बताकर उसकों समझाकर कि आगें क्या होने वाला है और आगें क्या क्या हम लोग किये यह सब जानकारी मजदूर को रहता है । और मुखिया को रहेगा । पूरा सोच विचार के मजदूर के साथ में जो भी काम करना है वह फिर किया जाता है चाहे वह छोटा

मुखिया हो चाहे बडा मुखिया हो और उसके तहत में काम होता है । लाल झन्डा की जो बात है वो अलग है उनका मैनेजर और नेता बात कर लिया तो उनका पूरा संगठन बात कर लिया ।

Q- आपके यहाँ निर्णय कैसे लिये जाते है कि कल जूलूस निकलना है कि नही निकलना है इसका फेसला कैसे किया जाता है

Ans- हमारे यहाँ मुख्य मुख्य बैठते है उसका तय होता है पूरा निचोड निकलेगा कि इसका काम को करने से ऐसा होगा तो हम पूरा सोच विचार करके एक बार नही दो बार नही पूरे पाँच बार सोच कर उस काम को करते है तो पूरा मुखिया बैठकर बिचार करके हम कोई भी कार्यकम हो फिर करते है ।

Q- नियोगी जी की हत्या के बाद कभी यह नही लगा कि अब आन्दोलन कैसे चलेगा । नियोगी जी का नेतृत्व नही है उनकी सोच थी वह हमें रास्तें दिखाते थे तो अब आन्दोलन छोड दे मुक्ति मोर्चा छोड दो ऐसा कभी ख्याल नही आया

Ans- जब नियोगी जी की हत्या हुआ तब कुछ क्षण के लिए तो लगा क्योकि हम उनके बीच में कम समय तक रहे रहने के लिए हम कम समय रहे । पर बहुत ज्यादा समय हम नियोगी जी के साथ में थे तो जब नियोगी जी की हत्या हुई हत्या होने के बाद पेड से जैसे कुछ फल टपकते है वैसे ही दिल्ली से आ रहे है जार्ज फर्नाडीज पहुच रहे है । वी.पी.सिंह पहुच रहे है तो लोगों की भी यहाँ धारणा हो गयी थी छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा का सगंठन यही लोग सम्भालेगें पर महेमान के मेहमान की तरह ही आते और जाते थे घर वालों को पता है हमें क्या करना है क्या नही करना

है । जनता के बीच ही धारणा थी कि छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा को बस यही नेता सम्भालेगा । अग्निवेश सम्भालेगा तो फला सम्भालेगा पर ऐसा कुछ नही हुआ

फिर कुछ दिन के लिए तो लगा कि अब हम क्या करेगे बच्चों के अगर माँ बाप खात्म हो जाये तो बच्चों को क्या लगेगा कि हम किसके सहारे जिये खैर बच्चा तो जी जायेगा पर लोग पर लगेगा जरूर उसकों तो हम लगा कि हम संगठन कैसे सम्भाले पर सूझ बूझ के साथ हमारे भाई लोग और हम लोग साथ में रहकर सम्भाले ।

Q- गोली काण्ड के बाद या और भी कई बार तुम लोग कही पर जाते हो कही पर बात रखने के लिए कि यहाँ कानून का उल्लघन हो रहा है यह वाला हक हमें नही मिल रहा तो कई बार तुम लोगों के उपर उल्टे केस दिये गये है कभी कही लोगों के उपर आन्दोलन में मुकदमें चल रहे है क्या ।

Ans- मेरे ही उपर चल रहे है ।

Q- कितने चल रहे है ।

Ans- दो तीन तो चल ही रहा है ।

Q- तुमको क्या लगता है जब कानून उस तरह से तुम पर मुकदमा चलाता है तुम्हे लगता है कि कानून ठीक है मुकदमा चल रहा है क्योकि तुमने गलती की है इसलिए चल रहा है क्या तुम पर मुकदमा चल रहा है

Ans- हम तो गलती नही मानते हम हक की लडाई लड रहे है और लडाई लडकर कानून के अगर जो भी सजा लिखी है चाहे वह

कोई भी सजा दे अगर हम हक की लडाई लड रहे है और अपने हक के लिए तो हम नही सोचेगें कि हम गलत काम कर रहे है । जब कम्पनी में श्रम कानून लागू नही हो रहा है उसे लागू कराने के लिए हम लोग लड रहे है तो क्या गलती कर रहे है ।

वह तो कोई गलती नही हुआ पर वह लोग गलती समझ कर जो प्रतिकिया करते है चाहे वह कुछ भी केस लगाये हम यह नही सोचते है हम तो यही सोचेगें कि वह गलत कर रहा है । कानून गलत कर रहा है या वह अपने कानून की तरह चल रहा है । तो हमको भी चलना पड रहा वह भी कानून के दायरे में रहकर ही चलेगें ।

Q- कभी ऐसा नही नही लगा कि जैसे उधोगपतियों ने तो नियोगी जी से उनको समझ में आ गया कि हमको प्रभावशाली आन्दोलन बन गया है । उसके कानून में और सीधी लडाई वह नही लड पायेगे इसलिए उन्होने नियोगी जी की हत्या कर दी वह तो कानून के अर्न्तगत उन्होने नही किया यह तो कानून के बाहर जाकर उन्होने किया आपकों कभी इतने साल सघर्ष करने में जैसे ८-९ साल लगा केडिया से थोडा थोडा पैसा मिल रहा है ८-९ साल इन्तजार करने का बहुत लम्बा होता है । पहले तो आपकों नौकरी से निकाल दिया । आपने तो कोई जुर्म नही किया था तो आपकों नही लगा कि यह कानून उगेरा का क्या साथ देना है । कोई और रास्ता अपनाया जाये कोई और तारीके से यह आन्दोलन लडा जाये ।

Ans- कुछ पल तो लगाता था कि ऐसा नही करना चाहिए पर अगर हम लोग कानून का सहारा नही लेगे तो ठीक भी है । उधोग पति के पक्ष में लोगों को हम जानते है कि उन्ही की सरकार है । उन्ही के सिपाही है । यह इन्ही का प्रशासन है जो भी पूरी व्यवस्था उन्ही की है । हमारा सिर्फ एकता है । हम सिर्फ एकता के बल मे ही लडाई लड सकते है । ओर सगंठन के बल में ही लडाई लड सकते है । तो हम सिर्फ कानून में रहकर और कानून का सहारा लेकर ही लडाई लडेगे चाहे वह कितना भी समय हो ।

Q- जो छततीसगढ भिलाई की बाकी जनता है मुक्ति मोर्चा का नाम तो भिलाई में सब जानते है । तो जो यहाँ का मध्यम वर्ग चाहे व वकीलों का हो चाहे व डाक्टरों का हो उन सबके प्रति क्या रवैया है । वह क्या सोचते है ।

Ans- हम अगर किसी भी की मदद के लिए है । काम किये है उनके बीच में काम किये है उनकों तो विश्वास है पहले तो वह जानते है कि छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा भले ही धीरे धीरे लडाई लडता है और सही लडाई लडता है और वह चाहे अधिकारी हो, नेता हो उनको छोडता नही है अपना लडाई लडकर सघर्ष व हिम्मत की बदौलत अपनी विजयी कर लेते है पर जो हमारे साथ जुडें है वह तो समर्थन के भी बहुत सारे जुडे है और जनता जानती है ।

अगर कोई गहराई से हमारे संगठन को नही देखें है हमारे साथ चले नही है वह तो जान नही सकते पर दूर से इतना जानेगे कि नही वह ठीक है और जो गुन्डें तत्व के लोग है जो मालिक के पक्ष के लोग है उनके लिए तो कांटा ही है कहाँ से यह मोर्चा

आया और हम लोग का रोजी रोटी छीन गया क्योकि लूटने का काम मै यह नही कहती बढा नही है लेकिन अगर हमारा संगठन नही रहता तो और भी व्यापक संगठन हो जाता लूट तो चल ही रही है लेकिन हमारा संगठन नही होता तो और भी व्यापक हो जाता ।

Q- क्या कोई नही मजदूर पीढि आ रही है जो फैक्ट्री में जा रही है या कम्पनी में जा रही है क्या और नये लोग मुक्ति मोर्चा में जुड रहे है कि मुक्ति मोर्चा में वही पुराने लोग है जो नियोगी के समय में थे ।

Ans- हॉ जुड रहे है बेरोजगार लडके भी जुड रहे है उनकों समझाना पडता है कि जो अभी हमारे बच्चें है उनको तो रोजगार मिलने वाला है नही यहॉ तो कितने ही शिक्षित लोग पडें है जिनकों नौकरी नही है और आये दिन वैसे भी यहॉ मशीनकरण हो रहा है और मशीनीकरण में तो बेरोजगार बेढेगा ही घटेगा तो नही इसके साथ साथ हमारा संगठन जो भी है चाहे वह बेरोजगार हो या छात्र लडके हो सके लिए भी लडाई लड रहा है ।

जैसे कि राजनॉद गांव के मील के बारे में लडें कि यह बंन्द ही होना चाहिए और उसमें बेरोजगार लडकों को जोडें जब काम पडता है तो उनको बुलाते है तो वह आते है ।

Q- तुमकों क्या लगता है कि जो मौखिक अधिकार सविधान में लिखो हे कि आप यूनियन बना सकते है आप बोल सकते है अगर आपकों कोई चीज गलत लग रही हो चाहे वह प्रदर्शन हो चाहे वह जूलूस हो लेख लिखना हो आज जो नया प्रदेश बना है

छत्तीसगढ क्या इन मौखिक अधिकारों का जो सविधान में हर नागरिक को दिये जाते है चाहे वह कोई भी हो लिखा हुआ है सविधान में क्या इनका कोई पालन हो रहा है क्या छत्तीसगढ का नया प्रदेश बनने से आपकों लगा है कि आपके हक जो है वह आपकों मिलेगे ।

Ans- ऐसा नही है पहले मध्यप्रदेश था मध्यप्रदेश बडा था अब उसका रूप हो गया छत्तीसगढ, छत्तीसगढ छोटा है । इसमें जो लूटने वाला है चाहे वह अधिकारी हो चाहे राजनेता हो चाहे कोई लोग हो इन लोगों की दुकान और भी ज्याद बढ गया दुकान इसलिए बढ गया क्योकि यह लोग जो शोषण करेगे अपना राज जो कायम करेगे वह तो और भी मजबूत करेगे ।

Q- ऐसे नही हो सकता कि आन्दोलन भी ज्यादा सुलवाई पायेगा कि मान लो जोगी तो यही है ज्यादा दूर नही जाना है भिलाई से उठकर रायपुर आ गये घेराव कर लिया ।

Ans- हॉ ऐसा है पहले हम लोग जबलपुर जाते थे जबलपुर जाने के लिए हमकों १२ घन्टें लगता थ और विलासपुर जाने के लिए तीन घन्टा लगता है तो हम किसी भी टाईम चले जाते है और पहले भोपाल जाना पडता था अब तो रायपुर में आ गया है तो रायपुर में जब चाहों तब जाओं

Q- ऐसा लगता है कि आपका जो मुख्यमंत्री है आप उसकों ज्यादा करीब से बात कर सकते है या उनकी नीति भी नही उसी तरह के नीतियॉ है जैसे पहले थी

Ans- बात करने का क्या है बात तो हम कभी भी कर सकते है । पर जो उसकी नीति है । नीति उसकी गलत है और गलत थी तो नीति उसकी बदल नही सकता ।

Q- किसके पक्ष में

Ans- नीति उधोगपति के पक्ष में है तो नीति तो वह बदल नही सकता तो बात करने से क्या है । दस बार भी हम बात करेगे । नीति उसकी वही है तो उससे कोई फर्क नही पडता ।

Q- नये छत्तीसगढ बनने से यह नही कहा जा सकता कि यहाँ के मजदूर का फायदा है । मजदूर या किसान का फायदा हुआ या नही छत्तीसगढ बनने से ।

Ans- नही नही

Q- नये छत्तीसगढ का या छत्तीसगढ का एक अपना राज्य है इसका सपना छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा ने भी देखा था नियोगी जी ने भी कहा था तो उसमें और जो छत्तीसगढ का राज्य बना है उसमें क्या फर्क है

Ans- उसमें यह फर्क है कि नियोगी जी जो चाहते थे नियोगी जी चाहते थे कि हर किसान को पानी मिले उसकी खेती के लिए अच्छा साधन हो । उसके धान की सही कीमत मिले और बच्चों की पढाई के लिए स्कूल हो । स्वास्थ्य के लिए अस्पताल हो । यह सारे सपने नियोगी जी ने देखे थे ।

अब यह लोग है किसान लोग खेत से जो धान पैदा कर रहे है उसको सही कीमत नही मिल पाता है तो हम कैसे माने कि जोगी किसान के हित में काम कर रहा है और पढे लिखे बच्चें

तो बेरोजगार घूम रहे है । जिसकों रोजी नही मिल रहा है तो हम कैसे माने कि जोगी अच्छा काम कर रहा है आज जहाँ देखों वही घूसखोरी चल रही है कोई लाख दो लाख रूपया उसका खाकर हज्म कर रहे है । उसकों नौकरी मिलने का कोई चॉन्स नही है ।

और जो नियोगी जी ने सपना देखा था वह यही सपना था कि पीने के लिए पानी हो । धान का सही कीमत मिले । बच्चे लोगों के स्वास्थ्य के लिए अस्पताल हो पर यह कहा हो पाता है । अस्पताल में भी अगर आप जायेंगे तो वही है कि डाक्टर लोगों को पैसे दिये बगैर भी काम नही होगा । नही तो मरते रहो वही अस्पताल में । कोर्ट में जाओगें तो वही है पूरी व्यवस्था में वही है तो हम कैसे माने कि जोगी सही काम कर रहा है ।